UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 29 गोपालकृष्ण गोखले (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

गोपालकृष्ण गोखले का जन्म 9 मई, 1866 ई० को रत्नागिरि के कोटलुक गाँव में हुआ। पिता कृष्णाराव और माता सत्यभामा सरल स्वभाव के थे। इन्होंने ही गोखले को देश के प्रति निष्ठा और विनम्रता जैसे गुणों की शिक्षा दी। कठिन परिस्थितियों में सादगी से विद्यार्थी जीवन बिताकर गोखले ने सन् 1884 ई० में मुम्बई के एलफिंस्टन कॉलेज से स्नातक परीक्षा पास की। अँग्रेजी भाषा पर इनका अधिकार था। गणित और अर्थशास्त्र पर भी इनकी अच्छी पकड़ थी। इतिहास के ज्ञान से इनके मन में स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के प्रति निष्ठा उत्पन्न हुई।
सन 1885 ई० में इन्होंने पणे में अध्यापन कार्य शुरू किया। इन्होंने यह कार्य बीस वर्षों तक किया। गणित, अँग्रेजी, अर्थशास्त्र और इतिहास आदि सभी विषयों को पढ़ाने के कारण इन्हें जन्मजात प्राध्यापक कहा जाता था।
सन् 1886 ई० में इन्होंने समाज सेवा और राजनीति में प्रवेश किया। गोखले लोगों में राष्ट्रीयता जगाने के लिए शिक्षा को जरूरी मानते थे। गरीबों की स्थिति सुधारने के लिए इन्होंने सर्वेट ऑफ इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना की। इसके अधिकांश कार्यकर्ता स्नातक थे। आदिवासियों का उत्थान, बाढ़ व अकाल पीड़ितों की मदद, स्त्रियों को शिक्षित और विदेशी शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष करना, इस संस्था के मुख्य उद्देश्य थे।
सन् 1887 ई० में ये महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य बने। इन्होंने सामाजिक जीवन में इन्हें 15 वर्षों तक शिक्षित किया। महात्मा गांधी जी ने गोखले को अपना राजनैतिक गुरु माना। गांधी जी ने गोखले से स्वराज्य प्राप्ति का तरीका सीखा।।
सन् 1889 ई० में गोखले कांग्रेस में शामिल हुए। सन् 1905 ई० में ये इंग्लैंड गए और वहाँ भारत के पक्ष को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया।
समाज सेवा करना गोखले के जीवन का परम लक्ष्य था। इन्होंने 1898 ई० में मुम्बई में प्लेग पीड़ितों की सेवा की; साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने के प्रयत्न किए। मादक पदार्थों की बिक्री पर रोक लगवाने का यत्न किया, भारतीय को अधिक नौकरी देने, सैनिक व्यय कम करने और नमक कर घटाने की माँग की। इन्होंने नि:शुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, कृषि और वैज्ञानिक शिक्षा और अकाल राहत कोष के सही प्रयोग के लिए सरकार पर दबाव डाला।। सन् 1912 ई० में ये दक्षिण अफ्रीका गए। इन्होंने वहाँ की सरकार से जातीय भेदभाव को समाप्त करने का आग्रह किया। 19 फरवरी, सन् 1915 को इनका निधन हो गया। अपने कार्यों और आदर्शों के लिए ये सदा अमर रहेंगे।

https://www.evidyarthi.in/